



Haathon Haath Phoophi Se Suh Kar Li (Hindi)

हाथों हाथ फूफी से सुलह कर ली

मअ् रिश्तेदारों के साथ अच्छे सुलूक के फ़ज़ाइल



शैखे तरीक़त, अमरी आहले मुनह, बानिये दो बते इस्लामी, हज़रते अल्लाह मौताना अबू बिसाल

مُحَمَّدِ إِلْيَاسِ الْمُتَّهِرِ كَانْدِرِي २-ج़वी



الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَاعُوذُ بِإِلٰهِ مِنَ الشَّيْطَنِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

کِتَابُ پَدْبَلِیٰ کی دُعاؤں

अज़ : शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अंतार क़ादिरी र-ज़वी दامت برکاتُهُمُ العالِيَّةُ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये ! جل جلال اللہ عزوجل جل جلال اللہ عزوجل

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْأَكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाजिल फ़रमा ! ऐ अ-ज़मत और बुजुर्गी वाले । (المُسْتَطْرِف ج ٤٠ دارالفنون بيرت)

नोट : अब्वल आखिर एक एक बार दुरुद शरीफ पढ़ लीजिये ।

تَلِيلِيَّةُ الْمَدِينَةِ
بِكَبِيرِ الْمَدِينَةِ
بِمَفْرُوتِ الْمَدِينَةِ
13 شबّان لول مُرکَّم 1428 هـ.

ہاثوں ہاथ فُوفی سے سُلھ کر لی

ये हिसाला (ہاثوں ہاथ فُوفी سے سُلھ کر لی)

शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अंतार क़ादिरी र-ज़वी दامت برکاتُهُمُ العالِيَّةُ ने उर्दू جِبَان में तहरीर फ़रमाया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरीक़त दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएँ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीए मक्टूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ॒ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
اَمَّا بَعْدُ فَاعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَنِ الرَّجِيمِ يَسِّرْ اللّٰهُ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ

ہاثوں ہاث فوپی سے سुلھ کر لی

شہزاد لاخ سوتی دیلائے مگر آپ یہہ رسالا (23 سفہرات) مुکتمل
پढ لیجیے اِن شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَ جَلَّ آپ کو مُفہیم ترین مآلومات میلے گی ।

دُرْدُ شَارِفٍ كَيْفَيَّةُ فَجْرِيَّةٍ (ﷺ کی فَجْرِيَّةٍ)

ہجڑاتے ساییدونا ابوبکر مسیح پھر مسیح بن ابی داؤد
خیلی سامرا کنڈی فرماتے ہیں : میں اک روز راستا
بھول گیا، اچانک اک ساہیب نجڑ آئے اور انہوں نے کہا :
”میرے ساتھ آओ ।“ میں ان کے ساتھ ہو لیا۔ مुझے گومان ہو گیا کہ یہ
ہجڑاتے ساییدونا خیلی سامرا (علیٰ نبیتہ و علیہ الصلوٰۃ والسلام) میرے
(یا نی پڑھنے) پر انہوں نے اپنا نام خیلی سامرا بتایا، ان کے ساتھ اک
اور بوجوگ بھی تھے، میں نے ان کا نام دریافت کیا تو فرمایا : یہ
ذلیل (علیٰ نبیتہ و علیہ الصلوٰۃ والسلام) ہے । میں نے ارجمند کی : اللہ عز و جل
آپ پر رحمت فرمائے، کیا آپ دونوں ہجڑات نے سرکارے کا انعام،
شاہنشاہ میڈال، مہربو بے ابتوں اردیں وسماوات، احمد مدد میڈل
میڈل میڈل کی جیوارت کی ہے ؟ انہوں نے

उस पर दस रहमें भेजता है। (۱۷)

جـ ٢٠١٣

हाथों हाथ फूफों से सुल्ह कर ली

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आज कल बात बात पर लोग
रिश्तेदारियां काट कर रख देते हैं, लिहाज़ा आपस में महब्बत की फ़ज़ा
क़ाइम होने की ख़्वाहिश की अच्छी नियत के साथ सवाब कमाने
के लिये रिश्तेदारों के साथ हुस्ने सुलूक के ज़िम्म में नेकी की दा'वत
पेश करते हुए म-दनी फूल पेश करने की सअूय करता हूं : हज़रते
सच्चिदुना अबू हुरैरा رضي الله تعالى عنه, एक मर्तबा सरकारे मदीना
दौरान फ़रमाया : हर क़ातेपु रेहूम (या'नी रिश्तेदारी तोड़ने वाला) हमारी
महफ़िल से उठ जाए । एक नौ जवान उठ कर अपनी फूफी के हाँ गया
जिस से उस का कई साल पुराना झ़गड़ा था, जब दोनों एक दूसरे से राज़ी
हो गए तो उस नौ जवान से फूफी ने कहा : तुम जा कर इस का सबब पूछो,

फरमान मुस्तफ़ा : عَلَيْهِ الْحَمْدُ وَالْكَبَرُ وَلِلّٰهِ الْحُكْمُ وَالْمُسْلِمُونَ
उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मरा जिक्र हो और वोह
मुझ पर दुर्दे पाक न पढ़े (ترمذی) ।

(الرواجر عن اقتراف الكبائر ج ٢ ص ١٥٣)

सास बहू में सुल्ह का राज़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! पहले के मुसल्मान
किस क़दर खौफे खुदा रखने वाले हुवा करते थे ! खुश नसीब नौ जवान
ने अल्लाहू^{عَزَّوَجَلَّ} के डर के सबब फ़ौरन अपनी फूफी के पास खुद हाजिर
हो कर सुल्ह की तरकीब कर ली । सभी को चाहिये कि गौर करें कि
ख़ानदान में किस किस से अनबन है जब मा'लूम हो जाए तो अब अगर
शर-ई उँग्रे न हो तो फ़ौरन नाराज़ रिश्तेदारों से “सुल्ह व सफाई” की
तरकीब शुरूअ़ कर दें । अगर झुकना भी पड़े तो बेशक रिजाए इलाही के
लिये झुक जाएं، اِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ سर बुलन्दी पाएंगे । फ़रमाने मुस्तफ़ा
या’नी “जो अल्लाहू^{عَزَّوَجَلَّ} مَنْ تَوَاضَعَ لِلَّهِ رَفَعَهُ اللَّهُ^{عَزَّوَجَلَّ} : है”
के लिये आजिज़ी करता है अल्लाहू^{عَزَّوَجَلَّ} तआला उसे बुलन्दी अंता फ़रमाता
है । ” (شَعْبُ الْأَيْمَانِ ۖ حۖ ۲۷۶ حدیث ۸۱۴۰) अपने घरों और मुआ-शरे को
अम्न का गहवारा बनाने के लिये दा'वते इस्लामी के मुश्कबार म-दनी
माहोल से वाबस्ता हो जाइये और हर माह कम अज़ कम तीन दिन के
लिये म-दनी क़ाफ़िले में सुन्तों भरा सफर कीजिये नीज़ म-दनी
इन्नामात के मुताबिक जिन्दगी गुजारिये । आप की तरगीब व तहरीस

فَرَمَّاَنَ مُوسَّطْفَامَا : عَلَى الْمُذْكُورِ عَلَيْهِ وَبِهِ وَسْطَامَ : جَوْ مُذْجَرْ پَرْ دَسْ مَرَتَبَا تُرْلَدَے پَاكَ پَدَهْ أَلَّلَاهُ حَمْدَلَهْ عَزَّزَلَهْ عَلَيْهِ وَبِهِ وَسْطَامَ : تَسْ پَرْ سَوْ رَهْمَتَنْ نَاجِيلَ فَرَمَّاَتَهْ ہے । (طریق)

के लिये एक म-दनी बहार पेश करता हूं, चुनान्चे बाबुल मदीना (कराची) के एक इस्लामी भाई के बयान का खुलासा है कि तवील अँसे से मेरी ज़ौजा और वालिदा या'नी सास बहू में खूब ठनी हुई थी, नतीजतन ज़ौजा रूठ कर मयके जा बैठी । मैं सख्त परेशान था, समझ में नहीं आता था कि इस मस्अले को कैसे हल करूं । ऐसे में दा'वते इस्लामी के इशाअँती इदारे मक-त-बतुल मदीना की जारी कर्दा “म-दनी मुज़ा-करे” की VCD “घर अम्न का गहवारा कैसे बने !” मेरे हाथ आई । मौजूअँ देखा तो बड़ी उम्मीद के साथ येह VCD खुद भी देखी और अपनी वालिदए मोह-त-रमा को भी दिखाई और एक VCD अपने सुसराल भी भेज दी । मेरी वालिदा को येह VCD इतनी पसन्द आई कि उन्होंने इसे दो बार देखा और हैरत अंगेज़ तौर पर मुझ से फ़रमाने लगीं : “चल बेटा ! तेरे सुसराल चलते हैं ।” मैं ने सुकून का सांस लिया कि लगता है जो काम मैं भरपूर इन्फ़िरादी कोशिश के बा वुजूद न कर सका वोह इस VCD ने कर दिया । मेरे सुसराल पहुंच कर वालिदा साहिबा ने बड़ी महब्बत से मेरी ज़ौजा को मनाया और उसे वापस घर ले आई । दूसरी जानिब मेरी ज़ौजा ने भी मुख्बत तज़र्रूज़ अँमल का मुज़ा-हरा किया और घर पहुंचने के बा'द दूसरे ही दिन अपनी सास (या'नी मेरी वालिदा) से कहने लगीं : अम्मीजान ! मेरा कमरा बहुत बड़ा है, जब कि दीगर घर वाले जिस कमरे में रहते हैं वोह क़दरे छोटा है, आप मेरा कमरा ले लीजिये और मैं उस छोटे कमरे में रिहाइश इख़ित्यार कर लेती हूं । حَمْدَلَهْ عَزَّزَلَهْ هमारा घर जो फ़ितने और फ़साद का शिकार था, दा'वते इस्लामी की ब-र-कत से अम्न का गहवारा बन गया । (म-दनी मुज़ा-करे की मज़कूरा VCD

فَرَمَّاَنِي مُسْتَفَاضًا صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : جِئْكَ هُوَ اَنْتَ اَوْ اَنْتَ تَحْكَمُ وَهُوَ بَدْ بَخْتٌ هُوَ اَنْتَ (۱۷)

”घर अम्न का गहवारा कैसे बने“ मक-त-बतुल मदीना से हिंदियतन ली जा सकती और दा’वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislami.net पर देखी और सुनी जा सकती है।

سیلए رہمی کی تا ’ریف

سیلा के मा’ना हैं : يَأُولُو الْأَيْمَانِ مِنْ أَنْوَاعِ الْحَسَانِ - या’नी किसी भी किस्म की भलाई और एहसान करना । (۱۰۶ ص ۲ اجر ح) और رेहम से मुराद : क़राबत, रिश्तेदारी है । (۱۴۷۹ ص ۱ العرب) “बहारे शरीअत” में है : سیلए رہم के मा’ना : रिश्ते को जोड़ना है या’नी रिश्ते वालों के साथ नेकी और सुलूक (या’नी भलाई) करना ।

(बहारे शरीअत, جि. 13, स. 558)

रिजाए इलाही के लिये रिश्तेदारों के साथ सिलए رہمी और इन की बद सुलूकी पर इन्हें दर गुज़र करना एक अ़ज़ीम अख़्लाकी ख़ूबी है और अल्लाह के यहां इस का बड़ा सवाब है ।

रिश्तेदारों के माली व अख़्लाकी हुकूक अदा कीजिये

पारह 15 सूरए बनी इसराईल आयत नम्बर 26 में अल्लाह इशाद غُرُوجُلَّ इर्शाद فَرमाता है :

وَاتِّذَا الْقُرْبَى حَقَّةً

(۲۶، بنی اسراءيل)

तर-ज-मए کन्जुल ईमान : और

रिश्तेदारों को उन का हक़ दे ।

سَدَرُولَ اَفْكَاجِلَ هَجَرَتِ اَلْلَامَاء مَौलَانَا سَعِيدِ مُحَمَّدِ نَدِيْمُدीْنِ مُرَادِ آبَادِيِّ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِيِّ ”ख़ज़ाइनुल इरफ़ान“ में इस आयते करीमा के तहूत लिखते हैं : इन के साथ सिलए رہمी कर और महब्बत और मेलजोल और ख़बर गीरी और मौक़अ पर मदद और हुस्ने मुआ़-शरत । مسَّالا : और अगर वोह महारिम (या’नी

فَرَمَّاَنِ مُسْتَفَضاً : ﴿صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ﴾ : جس نے مسٹھ پر سُبھِ و شام دس دس بار دُرُسے پاک پڑا۔ اسے کیا مات کے دن میری شافعیٰ اُبَّت میلے گی۔ (ابن حجر العسقلان)

ऐسا کُریبی ریشیدار کی اگر ان مें سے جس کیسی کो بھی مرد اور دूسرے کو اُبَّت فَرْجٍ کیا جائے تو نیکاہٗ حمےشا کے لیے هِرام ہو جائے باپ، مां، بُٹا، بُٹی، بَائِع، بَاهِن، چُچا، فُوفی، مامُ، خُلا، بَانِجَا، بَانِجِی (بَانِجِی) مें سے ہوں اور مُہِتاج ہو جائے تو ان کا خُرچٍ ٹھانا یہ بھی ان کا ہُکٌ ہے اور ساہِبِِ اسْتِتَّاَبَتْ ریشیدار پر لایِجِم ہے۔

(خُجَاجِ اینلِ اِرْفَان، ص. 530، مُتْبُوَّاً مک-ت-بُتُّل مَدِّيَّا)

سیلِ اے رہمی کرنے کے 10 فَارِدے

عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِيِّ اے رَبِّ الْعَالَمِينَ : سیلِ اے رہمی کرنے کے 10 فَارِدے ہیں : ﴿أَللَّاهُ أَكْبَرُ﴾ اَللَّهُ اَكْبَرُ کی ریجاٰ ہاسیل ہوتی ہے ﴿أَللَّهُ أَكْبَرُ﴾ لوگوں کی خُوشی کا سबب ہے ﴿أَللَّهُ أَكْبَرُ﴾ فِرِيشتوں کو مس رت ہوتی ہے ﴿أَللَّهُ أَكْبَرُ﴾ مُسالمانوں کی ترلف سے اس شاخِس کی تا' ریف ہوتی ہے ﴿أَللَّهُ أَكْبَرُ﴾ شَاءُوا ن کو اس سے رنج پہنچتا ہے ﴿أَللَّهُ أَكْبَرُ﴾ اُم्र بढتی ہے ﴿أَللَّهُ أَكْبَرُ﴾ رِجْک میں ب-ر-کت ہوتی ہے ﴿أَللَّهُ أَكْبَرُ﴾ فُلیت ہو جانے والے آبا اओ اَجَدَاد (�ا' نی مُسلمان بَابَ دادا) خُوش ہوتے ہیں ﴿أَللَّهُ أَكْبَرُ﴾ آپس میں مہبّت بढتی ہے ﴿أَللَّهُ أَكْبَرُ﴾ وَفَات کے بآ'd اس کے سواب میں ایذا فنا ہو جاتا ہے، کیونکی لوگ اس کے ہُکٌ میں دُعا اے خیر کرتے ہیں۔

(تَنْبِيَةُ الْغَافِلِينَ ص ۷۳)

تُوڈتے نہیں، جوڈتے اور سیلِ اے رہمی کرتے ہیں

پارہ 13 سو-رَتُورَّا'd آیات نمبر 21 میں اَللَّهُ اَكْبَرُ کا فَرمَان ہے :

وَالَّذِينَ يَصْلُوْنَ مَا أَمْرَأَ اللَّهُ
بِهِ أَنْ يُؤْصَلَ

تَر-ج-مَاءِ کَنْجُولِ اِمَّا : اُور وَہ کی جوڈتے ہیں اسے جس کے جوڈنے کا اَللَّهُ اَكْبَرُ نے ہُکم دیا۔

فَرَمَّاَنِي مُسْتَكْفًا : جِئِنَ الَّذِي عَلَيْهِ وَالْوَسْلَمُ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي (بِالرَّازِ)

سدھل افکاریل ہجڑتے اُلّالاما مौلانا سعید محدث نے مُدھیں مُراڈ آبادی کی ”**خُجَّاً إِنْوَلِ إِرْفَانٍ**“ میں اس آیتے کریما کے تھوت لیختے ہیں : یا’ نی اُلّالاہ کی تمام کتابوں اور اس کے کُل رسوؤں پر ایمان لاتے ہیں اور بآ’ ج کو مان کر بآ’ ج سے مُنکر ہو کر ان میں تپریک نہیں کرتے یا یہ مآ’ نا ہے کی : ہُکُوكِ کرآباد کی ریاضت رکھتے ہیں اور رشتأ کٹب نہیں کرتے । اسی میں رسوؤں کریم کی کرآباد میں اور ایمانی کرآباد میں بھی داخیل ہیں، ساداۓ کیرام کا اہتیرام اور مُسالمانوں کے ساتھ مُوہدات (یا’ نی مہببت) و اہسان اور ان کی مدد اور ان کی تحریک سے مُدا-ف-اُت اور ان کے ساتھ شافعیت اور سلام و دُعاء اور مُسلمان ماریجوں کی دیکھات اور اپنے دوستوں، خادیموں، ہمسایوں (اور) سफر کے ساٹھیوں کے ہُکُوك کی ریاضت بھی اس میں داخیل ہے ।

(خُجَّاً إِنْوَلِ إِرْفَانٍ، ص 482، مُلْبُوعَ مک-ت-بُرُول مداری)

بہترین آدمی کی خُسوسیات

سادھبے کرآنے مُبین، مہبوبے ربوبیل اُا-لہمیں، جناہے سادیکو اُمیں ایک مرتبا میمبارے اکڈس پر جلوا فرمائے کی ایک سہابی رضی اللہ تعالی عَنْہُ نے اُرج کی : “یا رسوؤل اُلّالاہ ! لُوگوں میں سب سے اچھا کون ہے ?” فرمایا لُوگوں میں سے وہ شاخص سب سے اچھا ہے جو کسرت سے کریم کی تیلابات کرے، جیسا دا مُتکی ہو، سب سے جیسا دا نکی کا ہُکم دے اور بُرائے سے مُنڈ کرنے والा ہو اور سب سے جیسا دا سیلائے رہنمی (یا’ نی رشتداروں کے ساتھ اچھا برتاؤ) کرنے والा ہو । (مسنون احمد ج ۱۰ ص ۴۰۲ حدیث ۴۷۵۰)

فَرَمَّاَنِي مُسْتَفَاضًا : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالَّهِ وَسَلَّمَ : جُو مُسْجَدٌ پر رَوْجَےِ جُو مُسْجَدٌ آڑُو دُرُودٌ شَرِيفٌ پَدَھَّا گا میں کیا مات کے دین اُس کی شَفَاعَاتِ کر لے گا । (جع الجواب)

تیلاؤت، پارہےٗ جاری، نےکی کی دا'�ت اور سیلائےٗ رہنمی

میठے میठےِ اسلامیٰ بھائیو ! خوب سواب لٹونے کی نیت سے بیان کردا ہدیسے مुبا-رکا کی روشانی میں کوچھ ”نےکی کی دا'�ت“ پेश کرنے کی سआدات ہاسیل کرتا ہے ۔ اس روایت میں سب سے اچھے آدمی کی چار خوبصورتی بیان کی گई ہے : (1) ب کسرت تیلاؤت (2) خوب پارہےٗ جاری (3) سب سے جیسا دادا نےکی کی دا'�ت دینا اور بُرائی سے مُعا-ن-اُت کرنا اور (4) رشته داروں سے ہُسنه سُلک ۔ وَاكِرْہِ یہ چاروں نیت ہی ڈمدا سیفیت ہے اللّاہُ اَكْبَرُ نسیب کرے ۔ آمین । اس چاروں کے فُضیل مولانا-ہذا ہوں ﴿۱﴾ ہجرت سیفیت ابू ہُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ سے مارکی ہے کہ نبی یحییٰ مُکرَّم، نورِ مُعْجَسَسَم، رَسُولِ اکرم، شہنشاہِ آدم و بنی آدم نے فرمایا : کیا مات کے دین کو رآن پढنے والوں آئے گا تو کو رآن ارجمند کرے گا : یا رَبِّ ! اَعُزُّ وَجْلُ ! اسے ہُلکا (یا'نی جنات کا لیباں) پہننا ۔ تو اسے کرامت کا ہُلکا (یا'نی بُرچوں کا جناتی لیباں) پہنایا جائے گا ۔ پھر کو رآن ارجمند کرے گا : “ یا رَبِّ ! اَعُزُّ وَجْلُ ! اس میں ڈجا فنا فرمایا ” تو اسے کرامت کا تاج پہنایا جائے گا، پھر کو رآن ارجمند کرے گا : “ یا رَبِّ ! اَعُزُّ وَجْلُ ! اس سے راجیٰ ہو جا । ” تو اللّاہُ اَكْبَرُ اس سے راجیٰ ہو جائے گا ۔ پھر اس کو رآن پڑنے والے سے کہا جائے گا : کو رآن پڑتا جا اور جنات کے د-رجات تے کرتا جا اور ہر آیت پر اسے اک نے'مات اُتھا کی جائے گی । (یرمذی ج ۴ ص ۴۱۹ حدیث ۲۹۲۴) ﴿۲﴾ پارہےٗ جاری کو آخیرت میں کامیابی کی نبید (یا'نی خوش خبری) سُنائی گई ہے چنانچہ پارہ 25 سو-رُتُجُونُکُف آیات نمبر 35 میں ارشاد ہوتا ہے :

۱ ﴿۲﴾ وَالْأُخْرَةُ عِنْ رَأْبِكَ لِتُتَقْبَلَ إِيمَانُكَ تر-ج-مَاءِ كَنْجُولِ إِيمَانٍ : اُور

4

مدید

لے : ب ۲۰۰ الز خرف

फरमाने मुस्तका : جس کے پاس مera جیکھا ہوا اور us نے مुझ پر دھر دے پاک ن پدا us نے جنnt کا راستا ڈیا (بُرَانِ) ।

आखिरत तुम्हारे रब के पास परहेज़ गारों के लिये है। 《3》 हज़रते सभ्यिदुना का'बुल अहबाबर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ का इर्शाद है : “जन्नतुल फ़िरदौस ख़ास उस शख्स के लिये है जो اَمْرٌ بِالْمَعْرُوفِ وَنَهْيٌ عَنِ الْمُنْكَرِ करे।” (या'नी नेकी का हुक्म दे और बुराई से मन्थ करे) 《4》 फ़रमाने मुस्तफ़ा حَسَنٌ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالَّهُ وَسَلَّمَ है : जिसे येह पसन्द हो कि उस की उम्र और रिज़्क में इज़ाफ़ा कर दिया जाए तो उसे चाहिये कि अपने वालिदैन के साथ अच्छा बरताव करे और अपने रिश्तेदारों के साथ सिलए रेहमी किया करे।²

उम्र व रिज्क में जियादती के मा'ना

दा 'वते इस्लामी' के इशाअृती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्खूआ 1197 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, "बहारे शरीअत" जिल्द 3 सफ़हा 560 पर सदरुश्शरीअह, बदरुत्तरीकह हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عليهِ رحمةُ اللَّهِ التَّوْيِي फ़रमाते हैं : हडीस में आया है कि "सिलए रेहूम से उम्र ज़ियादा होती है और रिज़क में वुस्त्रत (या'नी ज़ियादती) होती है।" बा'ज़ उ-लमा ने इस हडीस को ज़ाहिर पर हम्ल किया है (या'नी हडीस के ज़ाहिरी मा'ना ही मुराद हैं) या'नी यहां कुज़ा मुअल्लक मुराद है क्यूं कि कुज़ा मुबरम टल नहीं सकती ।³

إِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً^{٤٩} **وَلَا يَسْقُطُ مُؤْمِنٌ** (ب١، ٢١، يومنس)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : जब
उन का वा'दा आएगा तो एक घड़ी न
पीछे हटें न आगे बढ़ें।

और बा'ज़ (ङ-लमाए किराम) ने फ़रमाया कि

^١: تنبية المغتررين من ٢٣٦ م: الترغيب والترهيب ج ٢ ص ٢١٧ حديث ٦

3 : क़जा से मुराद यहां किस्मत है। क़जा की अक्साम और इस के बारे में तफ्सीलात जानने के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत्खुआ बहारे शरीअत जिल्द अब्ल सफ़हा 14 ता 17 का मुता-लआ कीजिये, खुसूसन मजलिस, अल मदीनतुल इल्मिया की तरफ से दिये गए हवाशी बे मिसाल और म-तअद्वद वसाविस का इलाज हैं।

फरमाने मुस्लिमों का: मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करा बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीजीगी का बाइस है। (بِالْعِزْمِ)

जियादतिये उम्र का येह मतलब है कि मरने के बाद भी इस का सवाब लिखा जाता है गोया वोह अब भी जिन्दा है या येह मुराद है कि मरने के बाद भी उस का जिक्र खैर लोगों में बाकी रहता है। (٦٢٨ ص)^٩

दो फ़रामीने मुस्तफ़ा ﴿١﴾ जो अल्लाह
और कियामत पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि सिलए रेहमी करे
﴿٢﴾ (بخارى ج ٤ ص ١٣٦ حديث ٦١٣٨) कियामत के दिन अल्लाह के
अर्श के साए में तीन किस्म के लोग होंगे, (उन में से एक है) सिलए रेहमी
करने वाला । (الفرقان: ٩٩ حديث ٢٥٢٦ ج ٢ ص ٩٩)

उम्मल मुअमिनीन हृजूरते जैनब और सिलाए रेहमी

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सत्य-दत्तुना आइशा सिद्दीका
रضي الله تعالى عنها فَرَمَاتِي هُنَّا : مैं ने हज़रते जैनब رضي الله تعالى عنها से ज़ियादा
दीनदार, ज़ियादा परहेज़ गार, ज़ियादा सच्ची, ज़ियादा सिलए रेहमी और
ज़ियादा स-दका करने वाली कोई औरत नहीं देखी । (حدیث ۲۴۴۲ مسلم ص ۱۳۲۰)

10 हजार दिरहम रिश्तेदारों को बांट दिये

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सच्चिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म की رضى اللہ تعالیٰ عنہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ उम्मुल मुअमिनीन हज़रते जैनब ने رضى اللہ تعالیٰ عنہ ख़िदमत में 10 हज़ार दिरहम भेजे तो उन्होंने येह रक़म अपने रिश्तेदारों को तक्सीम कर दी । اسد الغایہ ج ۷ ص ۱۴ مُلْخَصًا

रिश्तेदारों से तअल्लूक तोड़ने से बचिये

कराने पाक में इशारे बारी तआला है :

**وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسْأَلُونَ إِنَّمَا طَعَامُهُ
الْمُحْلِّي وَالْمُنْهَلِّ** (٤، النّساء: ١)

फरमान मुस्तफा : جس کے پاس میرا جنکر ہو اور وہ بمعجزہ پر دُرُّ د شریف ن پادھے تو وہ لोگوں مें سے کچھ ترین شاخزدہ ہے । (مسند احمد)

इस आयते मुबा-रका के तहूत “तपसीरे मज्हरी” में है : या’नी तूम कत्पु रेहमी (या’नी रिश्तेदारों से तअल्लक तोड़ने) से बचो ।

(تفسیر مظہری ج ۲ ص ۳)

जान बूझ कर क़त्तू रेहमी को जाइज़ समझना कुफ्र है
 परमाने मुस्तफ़ा : रिश्ता काटने वाला जनत में नहीं
 جاएगا । (بخاری ج ٤ ص ٩٧ حديث ٥٩٨) اس هدیے پاک کے تہوت لیخوتे ہیں : اس سے مुरاد یہ ہے
 کہ جو شاخہ بیگر کسی سबب اور بیگر کسی شعبدہ اور ک़त्तू रेहमी
 کے हرام होने के इलम के बा वुजूद इसे हलाल और जाइज़ समझता हो वोह
 کافِر है, हमेशा जहनम में रहेगा और जनत में नहीं जाएगा, या ये ह
 मुराद है कि पहले जाने वालों के साथ जनत में नहीं जाएगा या ये ह मुराद
 है कि अज़ाब से नजात पाने वालों के साथ भी नहीं जाएगा (या'नी पहले
 सजा पाएगा फिर जाएगा) । (٤١٢٢ تحت الحديث ٧) موقعة

(مرقاة ج ٧ تحت الحديث ٤٩٢٢)

“तप्हीमुल बुख़री” में है : इस में इख्तिलाफ़ नहीं कि सिलए रेहमी वाजिब है और इस को क़त्अ करना कबीरा गुनाह है। सिलए रेहमी के कुछ द-रजात हैं, कम अज़ कम द-रजा येह है कि नाराज़ी तर्क कर दे और सलाम व कलाम से सिला (या’नी अच्छा सुलूक) करे, कुदरत और हाजत के इख्तिलाफ़ से सिला (या’नी सुलूक) की मुख्तालिफ़ हालतें हैं, बा’ज़ हाल में सिलए रेहमी वाजिब है और बा’ज़ में मुस्तहब्ब है, अगर बा’ज़ हालात में सिला किया और पूरी तरह न किया तो इस को क़त्पर रेहमी नहीं कहते।

(تفہیم البخاری) (۲۲۱، ص ۹۷)

एक मा'लूमाती फृतवा मुला-हज्जा फ़रमाइये, फृतावा र-ज़्विय्या
जिल्द 13 सफ्हा 647 ता 648 पर है :

فَرَمَّاَنَ مُسْتَفَاعًا عَلَيْهِ وَإِلَيْهِ سَلَامٌ : تُومَ جَاهَنْ بَهِيْ هُوْ مُعْذَنْ پَارَ دُرُّودَ پَدَھَوَ كِيْ تُومَھَارَا دُرُّودَ مُعْذَنْ تَكَ پَهْنَچَتَا هُيْ । (طَرَانِي)

ہکیکی بھائی کو یہ کہنا : ”تُومَ مَرَءَ بَهِيْ نَهْيَنْ هُوْ“، کےسا ؟

سُوَالَّا : اگر جے د ہکیکی بھائی بکر کو کیسی سماجیش سے اک ماجلیس میں ب آواجے بولنڈ کالمیں اتھیبہ پدھ کر کہے کی : ”تُومَ مَرَءَ بَهِيْ نَهْيَنْ هُوْ“، اسی سوت میں جے د پر ب موجیبے شار-اے شاریف کوچ کفافرا لاجیم ہے ؟ اگر ہے تو کیا و کیس کدر ؟

جَواب : اگر اس کے بھائی نے اس کے ساتھ کوئی معاً-ملا خیل افے اخہلکیت کیا جو بھائی بھائی سے نہیں کرتا تو اس پر اس کہنے میں ایلjam نہیں کی اس نافی (یا'نی انکار) سے نافیہ ہکیکت (یا'نی ہکیکت سے انکار) موراد نہیں ہوتی بالکل نافیہ سامرا (ہے یا'نی بھائی ہونے کی وجہ سے جیسا سلوك کرنا چاہیے وہی سلوك نہیں کیا) اور اسی نہیں بالکل بیلہ وجہے شار-ای یون کہا تو تین کبیروں کا مور-تکیب ہووا : (1) کیجھے سریہ (یا'نی خुلا جھوٹ) و (2) کڑے رہم (یا'نی ریشتہ کاٹنا) و (3) ایضاً موسیل، اس پر توبہ فرج ہے اور بھائی سے معاًفی مانگنی لاجیم । وَاللَّهُ تَعَالَى أَعْلَم

ریشتہ توبہ کے میں میں رہمات نہیں **उत्तरती**

”تھ بارانی“ میں ہجارتے سیمیدونا آممش سے رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ آممش مانکول ہے، ہجارتے سیمیدونا ابتدللاہ اینے مسکوند اک بار سبھ کے وکٹ ماجلیس میں تشریف فرمایا تھے، انہوں نے فرمایا : میں کاتے اے رہم (یا'نی ریشتہ توبہ کے) کو اللہا کی کسما دےتا ہوں کی وہ یہاں سے ٹھ جائے تاکی ہم اللہا تھالا سے مانی فرست کی دعا کرے کیونکی کاتے اے رہم (یا'نی ریشتہ توبہ کے) پر آسمان کے درواجے بند رہتے ہیں । (یا'نی اگر وہ یہاں میں د رہے تو رہمات نہیں اتھرے گی اور ہماری دعا کبول نہیں ہوگی) (۸۷۹۳ رقم ۱۰۸ ص ۹)

فَرَمَانَهُ مُسْتَفَأٌ : صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْهُوَ أَكْبَرُ : جُو لੋਗ ਅਪਨੀ ਮਜ਼ਲਿਸ ਸੇ ਅਲਲਾਹ ਕੇ ਜਿੰਕ ਔਰ ਨਵੀ ਪਰ ਦੁਰੂਹ ਸ਼ਾਰੀਫ
ਪਢੋ ਬਿਗੈਰ ਤਡ ਗਏ ਤੋ ਵਾਹ ਬਦਬੂਦਾਰ ਮੁਦਰਿਤ ਸੇ ਤਡੇ । (شعب الایمان)

نਾਰਾਜ਼ ਰਿਖ਼ਤੇਦਾਰਾਂ ਸੇ ਸੁਲਹ ਕਰ ਲੀਜਿਧੇ

ਮੀਠੇ ਮੀਠੇ ਇਸਲਾਮੀ ਭਾਡਿਆ ! ਜੋ ਜ਼ਰਾ ਜ਼ਰਾ ਸੀ ਬਾਤਾਂ ਪਰ ਅਪਨੀ ਬਹਨਾਂ, ਬੇਟਿਆਂ, ਫੂਫਿਆਂ, ਖਾਲਾਓਂ, ਮਾਮੂਅਾਂ, ਚਚਾਓਂ, ਭਤੀਯਾਂ, ਭਾਨਯਾਂ ਵਗੈਰਾ ਸੇ ਕੱਤਾਂ ਰੇਹਮੀ ਕਰ ਲੇਤੇ ਹਨ, ਤਨ ਲੋਗਾਂ ਕੇ ਲਿਯੇ ਬਧਾਨ ਕਰਦਾ ਹਵੀ ਸੇ ਪਾਕ ਮੇਂ ਇਕੱਤ ਹੀ ਇਕੱਤ ਹੈ । ਮੇਰੀ ਮ-ਦਨੀ ਇਲਿਤਜਾ ਹੈ ਕਿ ਅਗਰ ਆਪ ਕੀ ਕਿਸੀ ਰਿਖ਼ਤੇਦਾਰ ਸੇ ਨਾਰਾਜ਼ੀ ਹੈ ਤੋ ਅਗਚੰ ਰਿਖ਼ਤੇਦਾਰ ਹੀ ਕਾ ਕੁਸੂਰ ਹੋ ਸੁਲਹ ਕੇ ਲਿਯੇ ਖੁਦ ਪਹਲ ਕੀਜਿਧੇ ਔਰ ਖੁਦ ਆਗੇ ਬਢ ਕਰ ਖੜਨਾ ਪੇਸ਼ਾਨੀ ਕੇ ਸਾਥ ਤਉ ਸੇ ਮਿਲ ਕਰ ਤਅਲਲੁਕਾਤ ਸੰਵਾਰ ਲੀਜਿਧੇ ।

ਕੱਤਾਂ ਰੇਹਮੀ ਕਰਨੇ ਵਾਲਾ ਮਾਗਿਫਰਤ ਸੇ ਮਹੱਤਵ

فَرَمَانَهُ مُسْتَفَأٌ : پੀਰ ਔਰ ਜੁਮਾ'ਰਾਤ ਕੋ ਅਲਲਾਹ ਤਅਲਾਤਾ ਕੇ ਹੁੜ੍ਹਰ ਲੋਗਾਂ ਕੇ ਆ'ਮਾਲ ਪੇਸ਼ ਹੋਤੇ ਹਨ, ਤੋ ਅਲਲਾਹ عَزَّ وَجَلَّ ਆਪਸ ਮੇਂ ਅੰਦਾਵਤ ਰਖਨੇ ਔਰ ਕੱਤਾਂ ਰੇਹਮੀ ਕਰਨੇ ਵਾਲਾਂ ਕੇ ਇਲਾਵਾ ਸਥ ਕੀ ਮਾਗਿਫਰਤ ਫਰਮਾ ਦੇਤਾ ਹੈ । (المُفْجَمُ الْكَبِيرُ لِالطَّبَرَانِيِّ ج ۱ ص ۱۶۷ حديث ۴۰۹)

ਅਮਾਨਤ ਔਰ ਸਿਲਾਏ ਰੇਹਮੀ ਕੀ ਸ਼ਿਕਾਯਤ ਪਰ ਪਕਢ ਹੋਗੀ

فَرَمَانَهُ مُسْتَفَأٌ : "ਅਮਾਨਤ ਔਰ ਸਿਲਾਏ ਰੇਹਮੀ ਕੀ ਭੇਜਾ ਜਾਏਗਾ ਤੋ ਵੋਹ ਪੁਲ ਸਿਰਾਤ ਕੇ ਦਾਏਂ ਔਰ ਬਾਏਂ ਜਾਨਿਬ ਖਡੀ ਹੋ ਜਾਏਂਗੀ ।" (۲۲۹ حديث ۱۲۷ مسلم من مुफ਼ਸਿਸ਼ੇ ਸ਼ਹੀਰ ਫ਼ਕੀਮੁਲ ਉਮਮਤ ਹੜਾਰਤੇ ਮੁਪਤੀ ਅਹਮਦ ਧਾਰ ਖਾਨ عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّاءِ ਇਸ ਹਵੀ ਸੇ ਪਾਕ ਕੇ ਤਹਹਤ ਫਰਮਾਤੇ ਹਨ : ਯੇਹ ਇਨ ਦੋਨੋਂ ਵਸ਼ਾਂ ਕੀ ਇਨਤਿਹਾਈ ਤਾ'ਜੀਮ ਹੋਗੀ ਕਿ ਇਨ ਦੋਨੋਂ ਕੋ ਪੁਲ ਸਿਰਾਤ ਕੇ ਆਸ ਪਾਸ ਖਡਾ ਕਿਧਾ ਜਾਵੇਗਾ ਸ਼ਫ਼ਾਅਤ ਔਰ ਸ਼ਿਕਾਯਤ ਕੇ ਲਿਯੇ, ਕਿ ਇਨ ਕੀ ਸ਼ਫ਼ਾਅਤ ਪਰ ਨਜਾਤ, ਇਨ ਕੀ ਸ਼ਿਕਾਯਤ ਪਰ ਪਕਢ ਹੋਗੀ । ਇਸ ਫਰਮਾਨੇ ਆਲੀ ਸੇ ਮਾ'ਲੂਮ ਹੁਵਾ ਕਿ ਇਨਸਾਨ ਅਮਾਨਤ ਦਾਰੀ ਔਰ ਰਿਖ਼ਤੇਦਾਰਾਂ ਕੇ ਹੁਕੂਕ ਕੀ ਅਦਾਏਗੀ ਜੁਝਰ ਇਖ਼ਤਿਯਾਰ ਕਰੇ ਕਿ ਇਨ ਦੋਨੋਂ ਮੈਂ

फरमाने मुस्तका : ﷺ علی اللہ تعالیٰ غلیہ و آہ وسلم (جع الموالی) |

कोताही करने पर सख्त पकड़ है मगर इन की शफ़ाअत पर दोज़ख़ से नजात है इन की शिकायत पर वहां गिरता है।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 7, स. 424)

तअल्लकात तोड़ने की सजा (हिकायत)

عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوْى
هِجْرَتْ سَيِّدُنَا فَكَرِيْهُ ابْرَاهِيمَ لَلَّهُ تَعَالَى اسْمَهُ
“تَمْبَيْهُلُلُوْغَافِيلِيْن” مें नक्ल करते हैं, हज़रते सव्यिदुना यहूया बिन
सुलैमَ زَادَهَا اللَّهُ شَرْفًا وَتَعَظِيْمًا مें : मक्काए मुकर्मा : में
एक नेक शख्स खुरासान का रहने वाला था, लोग उस के पास अपनी
अमानतें रखते थे, एक शख्स उस के पास दस हज़ार अशरफियां अमानत
रखवा कर अपनी किसी ज़रूरत से सफ़र में चला गया, जब वोह वापस
आया तो खुरासानी फौत हो चुका था, उस के अहलो इयाल से अपनी
अमानत का हाल पूछा : तो उन्होंने ला इल्मी ज़ाहिर की, अमानत रखने
वाले ने ड़-लमाए मक्काए मुकर्मा से पूछा कि मुझे क्या करना चाहिये ?
उन्होंने कहा : “हम उम्मीद करते हैं कि वोह खुरासानी जनती होगा, तुम
ऐसा करो कि आधी या तिहाई रात गुज़रने के बाद ज़मज़म के कुण्ड पर
जा कर उस का नाम ले कर आवाज़ देना और उस से पूछना ।” उस ने
तीन रातें ऐसा ही किया, वहां से कोई जवाब न मिला, उस ने फिर जा कर
उन ड़-लमाए किराम को बताया, उन्होंने “إِنَّا لِلّهِ مُسْتَعْنُونَ”
पढ़ कर कहा : “हमें डर है कि वोह शायद जनती न हो,” तुम यमन चले
जाओ वहां बुरहूत नामी वादी में एक कुंआं है, उस पर पहुंच कर इसी तरह
आवाज़ दो, उस ने ऐसा ही किया तो पहली ही आवाज़ में जवाब मिला
कि मैं ने उस को घर में फुलां जगह दफ़न किया है और मैं ने अपने घर
वालों के पास भी अमानत को नहीं रखा, मेरे लड़के के पास जाओ और

فَرَمَّاَنَ مُسْتَفَاضًا : مُعْذِّبُ الْعَالَمَيْنَ وَالْمُوَسَّطُ
عَزْوَجْلُ تُومَّاَرَهُ عَلَيْهِ وَإِلَيْهِ وَسَلَّمَ
بَهْجَةً । (ابن عثیمین)

उस जगह को खोदो तुम्हें मिल जाएगा चुनान्वे उस ने ऐसा ही किया और माल मिल गया । मैं ने उस से दरयाप्त किया कि तू तो बहुत नेक आदमी था तू यहां पहुंच गया ? वोह बोला : मेरे कुछ रिश्तेदार खुरासान में थे जिन से मैं ने क़त्ते तअल्लुक (या'नी रिश्ता तोड़) कर रखा था इसी हालत में मेरी मौत आ गई इस सबब से अल्लाह عَزْوَجْلُ ने मुझे येह सज़ा दी और इस मकाम पर पहुंचा दिया । (تبني الغافلين من ملخص)

किन रिश्तेदारों से सिला वाजिब है ?

दा'वते इस्लामी के इशाअृती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्भूआ 1196 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, “बहारे शरीअत” जिल्द 3 सफ़हा 558 ता 559 पर है : जिन रिश्ते वालों के साथ सिला (रेहम) वाजिब है वोह कौन हैं ? बा'ज़ ड़-लमा ने फ़रमाया : वोह ज़ू रेहम महरम हैं और बा'ज़ ने फ़रमाया : इस से मुराद ज़ू रेहम हैं, महरम हों या न हों । और ज़ाहिर येही कैले दुवुम है, अहादीस में मुत्लक़न (या'नी बिगैर किसी कैद के) रिश्ते वालों के साथ सिला (या'नी सुलूक) करने का हुक्म आता है, कुरआने मजीद में मुत्लक़न (या'नी बिला कैद) ज़विल कुर्बा (या'नी क़राबत वाले) फ़रमाया गया मगर येह बात ज़रूर है कि रिश्ते में चूंकि मुख्तलिफ़ द-रजात हैं (इसी तरह) सिलए रेहम (या'नी रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक) के द-रजात में भी तफ़ावुत (या'नी फ़र्क़) होता है । वालिदैन का मर्तबा सब से बढ़ कर है, इन के बा'द ज़ू रेहम महरम का, (या'नी वोह रिश्तेदार जिन से न-सबी रिश्ता होने की वज्ह से निकाह हमेशा के लिये हराम हो) इन के बा'द बक़िय्या रिश्ते वालों का अ़ला क़दरे मरातिब । (या'नी रिश्ते में नज़्दीकी की तरतीब के मुताबिक़)

(رُدُّ المُحتار ج ٩ ص ٦٧٨)

فرماনے مुسٹکا: مُعْذَنْ پر کسرت سے دُرُّدے پاک پڈو بے شک تُمھارا مُعْذَنْ پر دُرُّدے پاک پدنا (ابن عساکر) تُمھارے گواہوں کے لیے مارپرست (ابن عساکر) ہے۔

“ज़रेहम महरम” और “ज़रेहम” से मराद ?

मुफ्सिमरे शहीर, हकीमुल उम्मत, हज़रते मुफ्ती अहमद
यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَسَنِ سू-रतुल ब-करह की आयत 83
“وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَذِي الْقُرْبَى” “तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और
मां बाप के साथ भलाई करो और रिश्तेदारों से ।” के तहूत “तप्सीरे नईमी”
में लिखते हैं : और कुर्बा ब मा’ना क़राबत है या’नी अपने अहले क़राबत
के साथ एहसान करो, चूंकि अहले क़राबत का रिश्ता मां बाप के ज़रीए
से होता है और इन का एहसान भी मां बाप के मुकाबले में कम है इस लिये
इन का हक़ भी मां बाप के बा’द है, इस जगह भी चन्द हिदायतें हैं :
पहली हिदायत : ज़िल कुर्बा वोह लोग हैं जिन का रिश्ता ब ज़रीए मां
बाप के हो जिसे “ज़ी रेहूम” भी कहते हैं, येह तीन तरह के हैं : एक बाप
के क़राबत दार जैसे दादा, दादी, चचा, फूफी वगैरा, दूसरे मां के जैसे
नाना, नानी, मामूँ, ख़ाला, अख्याफ़ी (या’नी जिन का बाप अलग अलग हो
और मां एक हो ऐसे भाई और बहन का) भाई वगैरा, तीसरे दोनों के
क़राबत दार जैसे हक़ीकी भाई बहन । इन में से जिस का रिश्ता क़वी होगा
उस का हक़ मुक़द्दम । **दूसरी हिदायत :** अहले क़राबत दो किस्म के हैं एक
वोह जिन से निकाह ह्राम है, इन्हें ज़ी रेहूम महरम (या’नी ऐसा क़रीबी
रिश्तेदार कि अगर इन में से जिस किसी को भी मर्द और दूसरे को औरत फ़र्ज़
किया जाए तो निकाह हमेशा के लिये ह्राम हो जैसे बाप, मां, बेटा, बेटी,
भाई, बहन, चचा, फूफी, मामूँ, ख़ाला, भान्जा, भान्जी वगैरा) कहते हैं, जैसे
चचा, फूफी, मामूँ, ख़ाला वगैरा । ज़रूरत के बक्त इन की ख़िदमत करना
फ़र्ज़ है न करने वाला गुनहगार होगा । दूसरे वोह जिन से निकाह हलाल
जैसे ख़ाला, मामूँ चचा की औलाद इन के साथ एहसान व सुलूक करना

فَرَمَّاَنِي مُسْتَفْأِيَاً : صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : جِئِسِ نِئِي كِتَابَ مِنْ مُعْذَنَّ پَرِ دُرُونَدِي پاکِ لِخَيَا تَوْ جَبَ تَكَ مَرَا نَامَ اَنَّسَ مِنْ رَهَنَگَا فِيرَشَتَے اَسَ کَے لِيَيِهِ اِيسِتَفَأِرَ (या'नी बविश्वास की दुआ) كरते رहेंगे । (بخاری)

سُون्ते مُعْاَنَکَدا है और बहुत सवाब लेकिन हर क़राबत दार बल्कि सारे मुसल्मानों से अच्छे अख्लाक के साथ पेश आना ज़रूरी और इन को ईज़ा पहुंचानी ह्राम । (صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) **तीसरी हिदायत :** सुसराली दूर के रिश्तेदार ज़ी रेहम नहीं, हां इन में से बा'ज़ महरम हैं जैसे सास और दूध की माँ, बा'ज़ महरम भी नहीं, इन के भी हुकूक हैं यहां तक कि पड़ोसी के भी हक्क हैं मगर येह लोग इस आयत में दाखिल नहीं क्यूं कि यहां रेहमी और रिश्ते वाले मुराद हैं । (तफ़सीर नईमी, ج. 1, س. 447)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

“हुस्ने सुलूक” के सात हुरूफ़ की निस्बत से सिलए रेहमी के 7 म-दनी फूल

दा'वते इस्लामी के इशाअृती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 1197 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, “बहारे शरीअत” जिल्द 3 सफ़हा 559 ता 560 पर से “हुस्ने सुलूक” के सात हुरूफ़ की निस्बत से सात म-दनी फूल क़बूल फ़रमाइये :

﴿1﴾ किस रिश्तेदार से क्या बरताव करे

अहादीس में मुल्लक़न (या'नी बिगैर किसी कैद के) रिश्ते वालों के साथ सिला (या'नी सुलूक) करने का हुक्म आता है, कुरआने मजीद में मुल्लक़न (या'नी बिला कैद) ज़विल कुर्बा (या'नी क़राबत वाले) फ़रमाया गया मगर येह बात ज़रूर है कि रिश्ते में चूंकि मुख्तलिफ़ द-रजात हैं (इसी तरह) सिलए रेहम (या'नी रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक) के द-रजात में भी तफ़ावुत (या'नी फ़र्क़) होता है वालिदैन का मर्तबा सब से बढ़ कर है, इन के बा'द ज़ू रेहम महरम का, (या'नी वोह रिश्तेदार जिन से न-सबी रिश्ता होने की वज्ह से निकाह हमेशा के लिये ह्राम हो) इन के बा'द

फरमाने मुस्तफ़ा : جو مुझ पर एक दिन में 50 बार दुर्दे पाक पढ़े कियामत के दिन मैं उस से मुसा-फहा करूँ (या'नी हाथ मिलाऊ) गा । (بِشَكْوَال)

बक़िया रिश्ते वालों का अ़्ला क़दरे मरातिब । (या'नी रिश्ते में नज़्दीकी की तरतीब के मुताबिक़) (رُدُّ الْمُحتَار ج ٩ ص ٦٧٨)

﴿2﴾ रिश्तेदार से सुलूक की सूरतें

सिलए रेहम (या'नी रिश्तेदारों के साथ सुलूक) की मुख्तलिफ़ سूरतें हैं, इन को हदिया व तोहफ़ा देना और अगर इन को किसी बात में तुम्हारी इआनत (या'नी इमदाद) दरकार हो तो इस काम में इन की मदद करना, इन्हें सलाम करना, इन की मुलाक़ात को जाना, इन के पास उठना बैठना, इन से बातचीत करना, इन के साथ लुत्फ़ों मेहरबानी से पेश आना । (رُدُّ الْمُحتَار ج ١ ص ٣٢٣)

﴿3﴾ परदेस हो तो ख़त् भेजा करे

अगर येह शख्स परदेस में है तो रिश्ते वालों के पास ख़त् भेजा करे, उन से ख़तो किताबत जारी रखे ताकि वे तअल्लुक़ी पैदा न होने पाए और हो सके तो वत्न आए और रिश्तेदारों से तअल्लुक़ात ताज़ा कर ले, इस तरह करने से महब्बत में इज़ाफ़ा होगा । (رُدُّ الْمُحتَار ج ٩ ص ٦٧٨)

(फोन या इन्टरनेट के ज़रीए भी राबिते की तरकीब मुफ़ीद है)

﴿4﴾ परदेस में हो, मां बाप बुलाएं तो आना पड़ेगा

येह परदेस में है वालिदैन इसे बुलाते हैं तो आना ही होगा, ख़त् लिखना काफ़ी नहीं है । यूंही वालिदैन को इस की ख़िदमत की हाजत हो तो आए और उन की ख़िदमत करे, बाप के बा'द दादा और बड़े भाई का मर्तबा है कि बड़ा भाई ब मञ्ज़िला बाप के होता है, बड़ी बहन और ख़ाला मां की जगह पर हैं, बा'ज़ ड़-लमा ने चचा को बाप की मिस्ल बताया और हदीस : عَمُ الرَّجُلِ صُنُورٌ إِيَّهُ (या'नी आदमी का चचा बाप की मिस्ल होता है) से भी येही मुस्तफ़ाद होता (या'नी नतीजा निकलता) है । इन के इलावा

فَرَمَّاَنَ مُسْتَفَاضًا : بَارِئُهُ الْعَالِيُّ عَلَيْهِ وَالْسَّلَامُ : كِيَامَتُ لَوْغَوْ مِنْ سَمَاءٍ سَمَاءٌ
پَرِ جِيَاَدَا دُرُلَدَهْ يَاكَ پَدَهْ هُونَگَهْ । (ترمذی)

� اُرائے کے پاس خُتُبَ بھجنا یا ہدیyyا (یا'نی تُوهفَ) بھجنا کیفَیyat
کرتا ہے । (رُدُّ الْمُحْتَاجِ ص ۶۷۸)

﴿5﴾ کیس کیس رشیدار سے کب کب میلے

رشیداروں سے ناگاً دے کر میلتا رہے یا'نی اک دن میلنے کو
جا� دوسرا دن ن جاۓ (یا'نی اسی پر اندازا لگا کر)
کی اس سے مہببত و علپخت جیسا دا ہوتی ہے، بالکل اکیربا (یا'نی
کرابت داروں) سے جumu'a جumu'a میلتا رہے یا مہینے میں اک بار اور
تمام کبیلے اور خاندان کو اک (یا'نی معتہد) ہونا چاہیے، جب
ہکھک عن کے ساتھ ہو (یا'نی وہ ہکھک پر ہوں) تو دوسروں سے مukaabla اور
یزھرے ہکھک میں سب معتہد ہو کر کام کرئے । (۱۴۰۵ ص ۳۲۲)

﴿6﴾ رشیدار ہاجت پेश کرے تو رد کر دena گوناہ ہے

جب اپنا کوئی رشیدار کوئی ہاجت پेश کرے تو اس کی ہاجت
روایت کرے، اس کو رد کر دena کھڑے رہم (یا'نی رشتنا توڈنا) ہے ।
(ابضا) (یاد رہے ! سیلائے رہم واجب ہے اور کھڑے رہم ہرام اور جہنم
میں لے جانے والा کام ہے)

﴿7﴾ سیلائے رہم یہ ہے کی وہ توڈے تب بھی تum جوڈے

سیلائے رہمی (رشیداروں کے ساتھ اچھا سولوک) اسی کا نام نہیں
کی وہ سولوک کرے تو tum بھی کرو، یہ چیز تو ہکیکت میں مukaafat
یا'نی ادالا بدلنا کرنا ہے کی اس نے تumھارے پاس چیز بھج دی tum
نے اس کے پاس بھج دی، وہ tumھارے یہاں آیا tum اس کے پاس چلے
گا । ہکیکت ن سیلائے رہم (یا'نی کامیل د-رجے کا رشیداروں سے ہوسنے
سولوک) یہ ہے کی وہ کاٹے اور tum جوڈے، وہ tum سے جوہا ہونا چاہتا

فَرَمَّاَنِهِ مُسْتَفْأِيٌّ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْمَسْلَمُ : جِئِسِ نِئِ مُوذْنَاً پَرِ اکِ مَرَتَبَاً دُرُّدَ پَدَّا اَلَّلَّا هُوَ اَسَرَّ دَسَّ رَهْمَتِهِ
مَجَّاتِا اَوْرَ اَسَرَّ کِئِ نَامَّا اَوْ اَمَّا مَالَ مَنِ دَسَّ نَکِيَّا لِخَتَّا هُوَ ۔ (تَرمِيَ)

ہے، بے اُتْنَائِدِ (یا'نِی لَا پَرَوَاهِی) کرتا ہے اُور تُو مُ اس کے سَاتھ رِشَّتَ کے
ہُکُوكَ کی مُورَأَتِ (یا'نِی لِلَّهِ اَلِحَاظُ وَرِیَاضَتِ) کرَوَ । (۱۷۸ مِنْ رِدَّ الْمُحَتَاجِ)

صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ صَلَوَاتُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَى الْحَبِيبِ !

ہُسْنَےِ جَنِ رَخْبَنَےِ کَا تَرِيَكَ

مَيْتَهُ مَيْتَهُ اِسْلَامِيَّهُ بَاهِيَّهُ ! مَجْكُورًا سَاتَوْ مَ-دَنَّي فُولَ
نِيَاهِيَتَ تَوْجُّوْهَ کِيَابِلَ هُونَ، بِيلَ خُوْسُوسَ سَاتَوْ مَ-دَنَّي فُولَ
جِيسَ مَنِ “اَدَلَّهُ بَدَلَهُ” کِيَجِنِکَرَهُ اِسَ کِيَبَارَ مَنِ اَرْجُهُ ہُنَیَ کِيَ آجَ کَلَ
ڈُمُومَنَ يَهِيَ “اَدَلَّا بَدَلَا” ہُوَ رَهَہُ ہُنَیَ । اِکِ رِشَّتَدَارَ اِگَارَ اِسَ کَوَ
شَادِيَ کِيَ دَّا'وَتَ دَتَّا ہُنَیَ جَبَھِيَ يَهِيَ اِسَ کِيَ دَّا'وَتَ ہُنَیَ اِگَارَ وَوَهُ نَ دَ دَتَّا یَهِيَ
بَھِيَ نَهِيَّ دَتَّا । اِگَارَ اِسَ اَکَ نَيِ اِسَ کِيَ جِيَادَا اَفْرَادَ کِيَ دَّا'وَتَ دَيَ
اوَرَ يَهِيَ اِگَارَ اِسَ کِيَ کَمَ اَفْرَادَ کِيَ دَّا'وَتَ دَيَ ہُوَ اِسَ کِيَ ٹَيِكَثَاكَ
نُوَيِتِسَ لِيَا جَاتَا، خُوبَ تَنْكِيَدَنَهُ اَوَرَ گَيِبَتَنَهُ کِيَ جَاتِيَ هُونَ । اِسِيَ تَرَھَ جَوَ
رِشَّتَدَارَ اِسَ کِيَ يَهِيَانَ کِسِيَ تَكْرِيَبَ مَنِ شِرْكَتَ نَهِيَّ کَرَتَا ہُوَ يَهِيَ اِسَ کِيَ
يَهِيَانَ ہَوَنَےِ وَالَّا تَكْرِيَبَ کِيَ بَأَيَّ كَاتَ دَتَّا ہُنَيَ اَوَرَ یُونَ فَاسِلَهُ مَجِيَدَ
بَدَھَاءَ جَاتِي ہُونَ । هَلَالَنَ کِيَ کَوَرَہِ هَمَارَهُ يَهِيَانَ شَرِيكَ نَ ہُوَنَ ہُوَ ہُوَ اِسَ کِيَبَارَ
مَنِ اَچَھَ گُومَانَ رَخَبَنَےِ کِيَ کَرَہِ پَھَلُو نِيكَلَ سَکَتَهُ ہُونَ، مَ-سَلَنَ وَوَهُ نَ
آنَےِ وَالَّا بَيَمَارَ ہُوَ گَيَا ہَوَگَا، بَھُولَ گَيَا ہَوَگَا، جَرْعَرِيَ کَامَ آپَدَّا
ہَوَگَا، یَا کَوَرَہِ سَرَخَّا مَجَبُورَیَ ہَوَگِيَ جِيسَ کِيَ وَجَاهَتَ اِسَ کِيَ لِيَهُ دُوشَوارَ
ہَوَگِيَ وَغَرَّا । وَوَهُ اَپَنَيِ گَيِرَهُ حَاجِرِيَ کِيَ سَبَبَ بَتَّاَءَ، یَا نَ بَتَّاَءَ هَمَنَےَ
ہُسْنَےِ جَنِ رَخَ کِيَ سَبَابَ کَماَنَا اَوَرَ جَنَّتَ مَنِ جَانَےِ کَا سَاماَنَ کَرَتَهُ
رَهَنَا چَاهِيَهُ । چُونَانَهُ فَرَمَّاَنِهِ مُسْتَفْأِيٌّ : یَا'نِی حُسْنُ الظَّنِّ مِنْ حُسْنِ الْعِبَادَةِ ۔

(ابُو دَاوُد ج ۴ ص ۳۸۸ حَدِيث ۴۹۹۳)

फरमाने मुस्तफा : शब: صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ पर दुर्लभ की कसरत कर लिया करा जो एसा करेगा कियामत के दिन मैं उस का शफीअ व गवाह बनूंगा। (شعب اليمان)

मुफ्सिसरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ्ती अहमद यार खान عليه رحمة الحنان इस हृदीसे पाक के मुख्तलिफ़ मतालिब बयान करते हुए लिखते हैं : या'नी मुसल्मानों से अच्छा गुमान करना, इन पर बद गुमानी न करना येह भी अच्छी इबादत में से एक इबादत है ।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 6, स. 621)

जन्नत का महल उस को मिलेगा जो.....

बिलफर्ज हमारा रिश्तेदार सुस्ती के सबब या किसी भी वज्ह से जान बूझ कर हमारे यहां नहीं आया या हमें अपने यहां मदूर नहीं किया बल्कि उस ने खुल्लम खुल्ला हमारे साथ बद सुलूकी की तब भी हमें बड़ा हौसला रखते हुए तअल्लुक़ात बर क़रार रखने चाहिए, हज़रते सच्चिदुना उबय बिन का'ब رضي الله تعالى عنه سے रिवायत है कि سुल्ताने दो जहान, شहन्शाहे कौनो मकान, رहमते आ-लमिय्यान کा صلی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم फ़रमाने अ़ज़ीमुश्शान है : जिसे येह पसन्द हो कि उस के लिये (जन्नत में) महल बनाया जाए और उस के द-रजात बुलन्द किये जाएं, उसे चाहिये कि जो इस पर जुल्म करे येह उसे मुआफ़ करे और जो इसे महरूम करे येह उसे अ़ता करे और जो इस से क़ट्टू तअल्लुक़ करे येह उस से नाता (या'नी तअल्लुक़) जोडे ।

المسند لابن حبان ج ٣ ص ١٢١٥ حدیث (٣٢١٥)

(المُسْتَدِرَكُ لِلْحَاكِمِ ج ٣ ص ١٢ حديث ٣٢١٥)

दुश्मनी छुपाने वाले रिश्तेदार को स-दक्का देना अफ़ज़ल तरीन है

बहर हाल कोई हमारे साथ हुस्ने सुलूक करे या न करे हमें हुस्ने
सुलूक जारी रखना चाहिये । “مُسْنَدِ إِيمَانٍ حَنْبَلٌ ج ۹ ص ۱۳۸ حدیث ۲۳۵۸” کی
ہدیسے پاک مें है ائَ أَفَضَّلُ الصَّدَقَةِ الصَّدَقَةُ عَلَى نِي الرَّحْمَنِ الْكَاشِحِ ۔
या’नी बेशक अफ़ज़ल तरीन स-दक़ा वोह है जो दुश्मनी छुपाने वाले रिश्तेदार
पर किया जाए । (مسند امام احمد بن حنبل ج ۹ ص ۱۳۸ حدیث ۲۳۵۸)

(مسند امام احمد بن حنبل ج ۹ ص ۱۳۸ حدیث ۲۳۵۸۹)

फरमाने मुस्तफा : जो मुझ पर एक बार दुर्रद पढ़ता है अल्लाह उस के लिये एक कीरात अब्र लिखता है और कीरात उहूद पहाड़ जितना है। (بِهَرَبْرَان)

रिश्तेदार से जब सख्त दुख पहुंचा

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़
 رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ اَبُو بَكْرٍ سहابی हज़रते सय्यिदुना मिस्तह رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ جिन का आप ख़र्च उठाते
 رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ थे उन से सख़्त रन्ज पहुंचा और वोह येह कि उन्हों ने आप
 की प्यारी बेटी या'नी उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा
 سिद्दीक़ का पर तोहमत लगाने वालों के साथ मुवा-फ़क़त की
 थी, इस पर आप (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) ने ख़र्च न देने की क़सम खाई। इस
 पर पारह 18 सू-रतुन्नूर की आयत नम्बर 22 नाज़िल हुई। वोह आयते
 मबा-रका येह है :

وَلَا يَأْتِي أُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ
وَالسَّعَةُ أَنْ يُؤْتَوْا أُولَئِنَّ الْقُرْبَى وَ
الْمَسِكِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلٍ
اللَّهُ وَلَيَعْفُوا وَلَيَصْفُحُوا طَآلا
تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ طَ
وَاللَّهُ عَفْوٌ سَّارِحِينَ ۝ ۲۲

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और
कसम न खाएं वोह जो तुम में फ़ज़ीलत
वाले और गुन्जाइश वाले हैं क़राबत वालों
और मिस्कीनों और अल्लाह की राह में
हिजरत करने वालों को देने की और
चाहिये कि मुआफ़ करें और दर गुजरें
क्या तुम इसे दोस्त नहीं रखते कि
अल्लाह तुम्हारी बछिश करे और
अल्लाह बछाने वाला मेहरबान है ।

जब येह आयत सच्चिदे आ़लमَ نے पढ़ी तो
हज़रते सच्चिदुना अबू बक्र सिद्दीकُ عنْهُ ने कहा : बेशक मेरी
आरजू है कि अल्लाह (عَزَّوَجَلَّ) मेरी मगिफ़रत करे और मैं मिस्तह
(رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) के साथ जो सुलूک करता था उस को कभी मौकूफ़
(या'नी बन्द) न करूँगा चुनान्वे आप (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) ने उस (माली

فَرَمَّاَنَ مُسْتَفَاضًا : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَبِسْمِهِ وَسَلَّمَ : جَبْ تُومَ رَسُولَهُمْ بَرَدُورُدَّ پَدَّاً تُوْ مُسْجَنَّ پَرَّ بَرَّ بَرَّاً، بَرَّشَكَ مَئِنْ تَمَامَ جَاهَنَّمَّ
کے رکَّ کَا رَسُولَ لَهُنَّا (جمع الجواب)

تَأْمُوْنَ) کو جاری فَرَمَّا دِيَّا । اِس آیَت سے مَا'لُومٰ ہُوَوا کِی جو شَخْصٰ
کِسَّی کَام پَر کُسَّم خَاءِ فِیر مَا'لُومٰ ہُوَ کِی تَس کَا کَرَنَا هَی بَهْتَر
ہَی تَوْ چَاهِیَے کِی تَس کَام کَوْ کَرَے اُور کُسَّم کَا کَفَّارَا دَے، هَدَیَسے
سَهْیَهٰ مَئِنْ یَهَدِیَ وَهُنَّا عَنْهُ اَنْجَلَتَ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ
اَنْجَلَتَ سَابِتَ تُرْبَیَ، اِس سے آپ کی ڈُلُوْبَیَ
شَانَوْ مَرْبَتَ (يَا'نِی رُلَّتَ کی اَنْ-جَمَّاتَ) جَاهِرَ ہَوَتَیَ ہَی کِی اَللَّاْهُ
تَأْمُوْلَا نَے آپ (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ) کَوْ (آیَتَ کُرَآنِی مَئِنْ)
(يَا'نِی فَجَلَتَ وَالَّذِي اِنْجَلَتَ رَسَادَ) فَرَمَّا يَا । (خَجَاجِ اِنْتُلِ اِرْفَانِ، س. 563)
اَللَّاْهُ کَی تَن پَر رَحْمَتَ ہَوَ اُور تَن کَے سَدَکَے هَمَارَی بَے
ہِسَابَ مَغِفَرَتَ ہَوَ । اَمِينِ بِجَاهِ الْبَنِي اَلْمُمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

بَیَانَ ہو کِس جَبَانَ سے مَرْبَتَا سِدِّیکَے اَنْجَلَرَ کَا
ہَی یَارَے گَارَ مَهْبُوبَے ہُنْدَادَ سِدِّیکَے اَنْجَلَرَ کَا
مَکَامَے ہُنْدَادَ رَاهَتَ چَنَ سے آرَامَ کَرَنَے کَا
بَنَا پَهْلَوَے مَهْبُوبَے ہُنْدَادَ سِدِّیکَے اَنْجَلَرَ کَا

(جِاؤکے نَا'ت)

صَلَّوَاعَلَیْ الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَیْ مُحَمَّدٍ

یہ رِسَالَا پَدَّا کَوْ دُوسَرَے کَوْ دَیْرِیَے

شَادِی گَمِیَ کَی تَکْرِیَاتَ، اِنْجِیْمَا اَتَ، اَرَاسَ اُرَسَ اُرَسَ جَلَلَسَ
مَلِلَادَ وَگَرِیَرَ مَئِنْ مَکَنَ-بَاتَلَ مَدِینَا کَے شَاءَ اَنْ کَرْدَ رَسَاسِلَ
اُرَسَ مَدِینَا فَلَوْنَ پَر مُشَتَّمِلَ پَمَکَلَتَ تَکَسِّیَمَ کَرَ کَے سَوَابَ
کَمَادِیَ، گَاهِکَوْ کَوْ بَنِیَتَ سَوَابَ تَوْهَفَ مَئِنْ دَنَے کَلِیَے اَپَنَیَ
دُوكَانَوْنَ پَرِیَ رَسَاسِلَ رَخَنَے کَا مَا'مُولَ بَنَادِیَ، اَخْبَارَ فَرَوَشَوْنَ یَا
بَچَوْنَ کَے جَرِیَ اَپَنَے مَهْلَلَے کَے بَرَ بَرَ مَئِنْ مَاهَنَا کَمَ اَجَزَ کَمَ
اَنْدَدَ سُونَتَوْنَ بَرَ رِسَالَا یَا مَدِینَی فَلَوْنَ کَے پَمَکَلَتَ پَهْنَچَ
کَرَ نَکَیَ کَی دَیَّوَتَ کَی ڈُمَمَ مَصَادِیَ اُور ہُنْدَادَ سَوَابَ کَمَادِیَ ।

گَمِیَ مَدِینَا، بَکَیَ اَنْ،
مَغِفَرَتَ اُور بَے
ہِسَابَ جَانَتُلَ
فِرَدَوَسَ مَئِنْ اَکَا
کَے پَدَوَسَ کَا تَالِیَبَ
16 مُهَرَّسُلَ هَرَامَ 1436 سِ.ھ.

10-11-2014



तंगदस्ती से बचने का नुसख़ा और जनत का ख़ज़ाना

दो फ़रामीने मुस्तफ़ा :

(1) कोई घर वाले ऐसे नहीं कि आपस में सिलए रेहमी (या'नी रिश्तेदारों के साथ अच्छा बरताव) करें फिर मोहताज (या'नी तंगदस्त) हो जाएँ^۱ (2) चार चीजें जनत के ख़ज़ानों में से हैं: स-दक़ा छुपा कर देना, मुसीबत छुपाना, सिलए रेहमी करना और **لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ** कहना^۲

ل: الاحسان بترتيب صحيح ابن حبان ج ۱ ص ۳۳۳ حديث ۴۴۱

ل: تاريخ بغداد ج ۲ ص ۴۰۴



मक-त-घतुल मधीना®

द्वा खने इस्लामी

फैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बगीचे के सामने, मिरजापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net